भारत – आइसलैंड संबंध

सिंहावलोकन

दूरी एवं आबादी के आकार में प्रतिलोम के बावजूद भारत और आइसलैंड ने साझे मूल्यों एवं हितों में समानता के आधार पर मैत्री का निर्माण करने के लिए एक – दूसरे के करीब पहुंचे हैं। वर्ष 2000 से उच्च स्तर पर यात्राओं की कड़ी ने द्विपक्षीय संबंधों को एक नई गति प्रदान की है, जिसे रेजीडेंट मिशनों (नई दिल्ली में फरवरी, 2006 में और रेक्जाविक में अगस्त, 2008 में) को खोलकर संपोषित किया गया है।

आइसलैंड पहला नार्डिक देश है जिसने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यू एन एन सी) की स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी का सार्वजनिक तौर पर समर्थन किया है। इसके बाद, आइसलैंड ने अनेक अवसरों पर अपने इस दृष्टिकोण को दोहराया है। आइसलैंड 2005 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार पर जी-4 के प्रारूप रूपरेखा संकल्प को सह-प्रायोजित करने वाला भी पहला देश है।

भारत और आइसलैंड के डिग्नेटरी के बीच उच्च स्तर पर द्विपक्षीय यात्राओं से दोनों देशों के बीच आधिकारिक संबंध सुदृढ़ हुए हैं। प्रमुख आधिकारिक यात्राओं में भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा. ए पी जे अब्दुल कलाम की मई, 2005 में आइसलैंड की यात्रा तथा अक्टूबर, 2000 में आइसलैंड के राष्ट्रपति महामहिम डा. ओल्फुर रंगनार ग्रीमसन की भारत की यात्रा शामिल हैं। आइसलैंड के राष्ट्रपति ने फरवरी, 2005, जनवरी, 2007 और फरवरी, 2008 में भी दिल्ली संपोषणीय विकास शिखर बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने 11 से 17 जनवरी, 2010 के दौरान भारत का राजकीय दौरा किया तथा इस यात्रा के दौरान उन्होंने 2007 के लिए अंतर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ के लिए जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार प्राप्त किया। राष्ट्रपति ग्रीमसन की भारत की नवीनतम यात्रा 29 मार्च से 6 अप्रैल, 2013 के दौरान भारत यात्रा है।

विदेश कार्यालय परामर्श

राष्ट्रपति जी आइसलैंड की राजकीय यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित विदेश कार्यालय परामर्श के लिए एम ओ यू अनुसरण में विदेश कार्यालय परामर्श के दो चक्रों का आयोजन किया गया है – पहला चक्र नई दिल्ली में 7 अक्टूबर, 2005 को और दूसरा चक्र रेक्जाविक में 21 से 23 जून, 2006 के दौरान आयोजित किया गया। दोनों पक्ष अगले विदेश कार्यालय परामर्श के लिए परस्पर स्वीकार तिथि निर्धारित करने के लिए आपस में परामर्श कर रहे हैं।

सीआइआइ के साथ मिलकर भारतीय दूतावास ने 14 मार्च, 2010 को रेक्जाविक में पहला भारत – आइसलैंड व्यवसाय संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन उद्योग,

ऊर्जा एवं पर्यटन मंत्री द्वारा किया गया, जबकि समापन भाषण आइसलैंड के राष्ट्रपति द्वारा दिया गया। इस कार्यक्रम में आइसलैंड की 40 से अधिक कंपनियों तथा यूके एवं डेनमार्क के बाहर स्थित चार भारतीय कंपनियों ने भाग लिया।

दो तरफा निवेश

(i) अक्टाविस फार्मास्यूटिकल कंपनी

अक्टाविस ने 2001 में भारत में कदम रखा। इसने डा. रेड्डी के दो संयंत्रों – एक गोवा में और दूसरा मुंबई के पास – का अधिग्रहण किया। अंबरनाथ में एक्टाविस की आर एंड डी सुविधाएं हैं तथा नवी मुंबई में लैब इंडिया से यह जैव समतुल्यता अध्ययन की सुविधाएं प्राप्त करती है। आज अक्टाविस अग्रणी जेनरिक मल्टी नेशनल फार्मास्यूटिकल कंपनियों में से एक है तथा भारत में 8 से अधिक स्थानों पर इसकी उपस्थिति है। एक्टाविस के पास भारत में नवीनतम, हाइटेक सुविधाएं हैं जैसे कि मुंबई में ए पी आई विकास एवं विनिर्माण; अंबरनाथ (मुंबई के निकट) में फार्मूलेशन डवलपमेंट; गोवा में फार्मूलेशन को विनिर्मित करने का कार्य; बेलापुर, नवी मुंबई और बंगलौर में जैव समतुल्यता अध्ययन केंद्र; और चेन्नई में वैश्विक स्थिरता केंद्र। मुंबई, गोवा और चेन्नई में इसके भेषज उत्पाद एवं विनिर्माण संयंत्र हैं।

(ii) साइप्लास्ट कंपनी :

यह प्लास्टिक के सामान बनाती है। यह अहमदाबाद में भारत में टब बनाने वाली कंपनी चलाती है। 2004 से 2008 की अवधि के दौरान, भारत में इसका ऑपरेशन आइसलैंड में इसकी मूल कंपनी के आपरेशन से बड़ा था। परंतु आइसलैंड में आर्थिक संकट के बाद अक्टूबर, 2008 में इनको बंद कर दिया गया।

(iii) आइसलैंड की दो आईटी कंपनियों – ईसी साफ्टवेयर और ग्रीन लाइन साफ्टवेयर ने क्रमश: चेन्नई और पुडुचेरी में अपनी सहायक कंपनियां स्थापित की हैं। यह ई-कॉमर्स डिजाइनिंग, परामर्श, बिक्री एवं सेवा क्षेत्र में व्यवसाय करती है।

(iv) वेरकिस : यह एक परामर्शी इंजीनियर कंपनी है। यह भवन डिजाइन में सेवाएं प्रदान करती है जिसमें पावर प्लांट, परिवहन संरचनाएं, औद्योगिक भवन तथा सेवा सुविधाएं शामिल हैं। वेरकिस ने ओपी स्टील की सहायक कंपनी कृष्णा हाइड्रो पोजेक्ट्स नामक एक भारतीय कंपनी के साथ भारत में लघु जल विद्युत परियोजनाओं पर एक साथ काम करने के लिए एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किया है। वेर्किस परियोजना पर्यवेक्षण, सुरक्षा, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य परामर्श में भी सेवाएं प्रदान करती है।

(v) प्रोमेंस : यह अहमदाबाद के करीब मंसा में एक लघु रोटेशनल माउल्डिंग प्लांट चला रही है। यह सी-फूड एवं आइसक्रीम उद्योग के लिए इंसुलेटेड बॉक्स बनाती है। इसका विकास दर

निरंतर उत्थान पर है। यह भारत के अन्य भागों में अपनी अन्य प्रचालन यूनिटें स्थापित करने की योजना बना रही है।

सहयोग के लिए उदीयमान क्षेत्र

निम्नलिखित क्षेत्रों में परस्पर लाभप्रद सहयोग को गहन करने की अच्छी संभावना है जिसमें आइसलैंड के पास आला क्षमता एवं सुविधा है :

- नवीकरणीय ऊर्जा - आइसलैंड बड़े पैमाने पर जियो थर्मल एनर्जी और हाइड्रोजन आधारित प्रौद्योगिकी का प्रयोग करता है जो भारत के लिए भी उपयोगी हो सकती है। 30 अक्टूबर, 2010 को अपनी बैठक में भारत - आइसलैंड संयुक्त सिमति की उद्घाटन बैठक ने सहयोग के लिए अनेक क्षेत्रों की पहचान की जिसमें आइसलैंड जियो सर्वे (आई एस ओ आर) के सहयोग से राष्ट्रीय भू-भौतिकी अनुसंधान संस्थान (एन जी आर आई) भारत के जियो थर्मल एनर्जी के क्षेत्रों का मानचित्रण एवं अन्वेषण, भारत और आइसलैंड की कंपनियों के सहयोग से संभावित जियो थर्मल साइटों में एक मेगावाट के आकार वाली जियो थर्मल विद्युत परियोजनाओं का प्रदर्शन, स्पेस हीटिंग, कूलिंग, ग्रीन हाउस कल्टिवेशन आदि जैसे डाउनस्ट्रीम अप्लीकेशन में जियो थर्मल एनर्जी का उपयोग तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एम एन आर ई), एन जी आर आई, जम्मू एंड कश्मीर स्टेट पावर डवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (जे के एस पी डी सी एल) तथा अन्य संबंधित संगठनों के कार्मिकों के लिए आइसलैंड में संयुक्त राष्ट्र जियो थर्मल प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण शामिल है।
- भूकंपीय गतिविधि का अनुमान लगाने के लिए प्रौद्योगिकी – मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल की यात्रा के दौरान भारत और आइसलैंड भारत में एक परियोजना स्थापित करने में सहयोग करने केलिए सहमत हुए थे। जियो थर्मल एनर्जी में सहयोग के लिए एम ओ यू पर हस्ताक्षर के अनुसरण में दोनों पक्षों ने एक परियोजना दस्तावेज तैयार किया है तथा इसे भारत के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा अनुमोदित किया गया है।
- जीन मैपिंग – आइसलैंड की कंपनी 'डिकोड जेनेटिक' इस प्रौद्योगिकी में सबसे आगे है तथा भारत और आइसलैंड के वैज्ञानिकों के बीच साझेदारी उपयोगी हो सकती है।
- मछली पालन – मछली पालन में आइसलैंड एक महाशक्ति है तथा विशेष रूप से गहरे पानी में मछली पकड़ने और मछली के प्रसंस्करण में हमारे मछली पालन क्षेत्र के विकास में इसकी सक्षमता बहुत उपयोगी हो सकती है। आइसलैंड की एक कंपनी ने मछली की खाल से लेदर तैयार करने की प्रक्रिया विकसित की है। यह बहुत सफल व्यवसाय साबित हुआ है तथा कंपनी अपने उत्पादन का निर्यात कई देशों को करती है। भारत में प्रचुर मात्रा में मछलियों की उपलब्धता तथा चमड़ा उद्योग एवं चमड़ा उत्पाद में हमारी महारत को देखते हुए यह सहयोग का एक रचनात्मक क्षेत्र हो सकता है।

शिक्षा एवं संस्कृति

भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग में आइसलैंड की रूचि है। यह छात्रों एवं संकाय सदस्यों के आदान – प्रदान, अतिथि व्याख्यान आदि के रूप में हो सकता है। आइसलैंड विश्वविद्यालय में एक अल्पावधिक चेयर स्थापित करने का प्रस्ताव उनके पास लंबित है।

आइसलैंड के लोग भारतीय संस्कृति, विशेष रूप से योग, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, पेंटिंग, फिल्म एवं भोजन में गहरी रूचि लेते हैं। पर्यटन के लिए आइसलैंड के कई लोग भारत आते हैं। हमने एक द्विपक्षीय सांस्कृतिक करार किया है तथा 2010 – 2013 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर हस्ताक्षर जनवरी, 2010 में आइसलैंड के राष्ट्रपति की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान किया गया था। भारत – आइसलैंड मैत्री सोसायटी तथा फ्रैंड्स ऑफ इंडिया फोरम द्विपक्षीय सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने में सक्रिय हैं।

हाल के वर्षों में, आइसलैंड फिल्मों की शूटिंग के लिए मनपसंद डेस्टिनेशन बन गया है। अगस्त – सितंबर, 2012 में दो भारतीय फिल्मों (एक बंगाली और दूसरी तेलगु) की आंशिक रूप से शूटिंग आइसलैंड में हुई। 2014 में, भारत से गोल्फ खिलाड़ियों के एक समूह ने एक टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए आइसलैंड का दौरा किया।

जुलाई, 2013 में रिक्जाविक और अकुरेयरी में एक लघु भारतीय महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें भाग लेने के लिए सुश्री प्रगति सूद आनंद तथा उनके ग्रुप को आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित किया गया। भारतीय पर्यटन विकास निगम (आई टी डी सी) से दो शेफ ने इस अवधि के दौरान एक सप्ताह चलने वाले व्यंजन महोत्सव में भाग लिया। केरल पर्यटन विकास निगम तथा स्थानीय हिल्टन होटल की मदद से मई, 2014 में रिक्जाविक एवं वेस्टर्न फजोर्ड में द्वितीय भारत सप्ताह का भी आयोजन किया गया। एक सप्ताह तक होटल में भारतीय व्यंजन परोसे गए तथा आइसलैंड के विदेश मंत्री, सेंट्रल बैंक गर्वनर तथा अन्य गणमान्य हस्तियों ने स्वागत समारोह में भाग लिया। सुश्री प्रगति सूद द्वारा परफार्मेंस भी इस कार्यक्रम का हिस्सा था। केरल से एक आयुर्वेद के डाक्टर ने इस सप्ताह के दौरान व्याख्यान दिया एवं मरीजों का इलाज किया।

भारतीय समुदाय

आइसलैंड की आधिकारिक सांख्यिकी के अनुसार आइसलैंड में भारतीय नागरिकों की संख्या 100 के आसपास है। इसके अलावा, आइसलैंड के लोगों द्वारा 166 भारतीय बच्चों को गोद लिया गया है।

उपयोगी संपर्क

भारतीय दूतावास, रिक्जाविक की वेबसाइट :
www.indianembassy.is

***

जनवरी, 2015